संशय की एक रात और मूल्यबोध

– प्रो. शिवप्रसाद शुक्ल

एक ओर कवियों को देश निकाला का ऐलान किया जा रहा हो और दूसरी तरफ पूँजीवादी, निगमिक पूँजीवादियों द्वारा प्रदत्त धन के आधार पर नोबल, सरस्वती, व्यास, ज्ञानपीठ या भारतभारती सम्मान दिये जा रहे हो तो नरेश मेहता के आत्म संघर्ष को राष्ट्र संघर्ष एवं समाज संघर्ष से जोडकर मूल्यबोध की बात करना सामूहिक प्रयास हो सकता है परंतु वैयक्तिक प्रयास कभी नहीं हो सकता। डॉ. सुरेशचंद्र एक ऐसे आलोचक, कवि एवं रचानाकार हैं जिन्होंने ''बीसवी सदी का रामकाव्य और मूल्यबोध, 'नरेश मेहता की काव्य साधना', 'दलित चिन्तन की दिशाएँ', 'महाभिनिष्क्रमण' (काव्य नाटक), दो काव्य संग्रह 'कर्मण्येवाधिकारस्ते', भगवान का अनुभव एवं कई किताबों के सम्पादन के साथ आलोच्य कृति 'समकालिन मूल्यबोध और संशय की एक रात' को अध्ययन की दृष्टि से विषय प्रवेश, उपसंहार के अलावा 6 अध्यायों एवं 152 पृष्ठों में विन्यस्त किया है। विषय प्रवेश में डॉ. विद्या सिंह, डॉ. शशि सहगल, डॉ. बैजनाथ शर्मा, डॉ. कमला प्रसाद पाण्डेय, डॉ. प्रभाकर शर्मा, डॉ. हुकुमचंद राजपाल, डॉ. हरिचरण शर्मा, डॉ. सुंदरलाल कथूरिया, रविन्द्रनाथ दरगन, डॉ. महावीर सिंह एवं डॉ. सरोज पंड्या के शोध लेखों एवं लेखों की सूक्ष्म खूबियों को उजागर करते हुए लिखा कि ''डॉ. चौहान ने नरेश मेहता के इस कार्य को चुनौती पूर्ण और कठिन माना है। प्रस्तुत लेख में डॉ. चौहान ने काव्य नायक राम की तुलना मुक्तिबोध की अँधेरे में लम्बी कविता के नायक से करते हुए यह बताया है कि दोनों काव्य नायकों की स्थिति समान है। दोनों नायक आंतरिक विकलता में जीते हैं। प्रस्तुत लेख में संशय की एक रात के प्रति डॉ. चौहान का दृष्टिकोण प्रशंसात्मक रहा है।'' (पृष्ठ 15)

हम सब जानते हैं कि दो विश्व युद्धों, भारत, पूर्वी पाकिस्तान, पश्चिमी पाकिस्तान विभाजन, चीन की विस्तार कुटिल नीतियों के बीच राम जैसे चरित्रवान नायक को ''संशय की एक रात'' में निरूपित करते हुए मिथक को समकालीन नेहरू युग के प्रतिनिधिकर्ता को संशय में पाते हैं। डॉ. सुरेशचंद्र ने अध्याय प्रथम में नरेश मेहता के व्यक्तिगत एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला है। इससे उनके जीवन के संशय का भी पता चलता है। फिलहाल काशी पहुंचकर कवि बनने की होड, सरकारी नौकरियों को करने एवं त्यागने का ड्रामा, प्रेम विवाह होते होते रूक जाना और उस औरत ने आत्महत्या करके नरेश मेहता को भी संशयग्रस्त बनाया। फिलहाल उनकी पत्नी महिमा जी उनके जीवन में बुनियादी परिवर्तन लाती है। उन्होंने 12 मुक्तक काव्य, 5 प्रबंध काव्य, 8 उपन्यास, 3 कहानी संग्रह, दो नाटक, दो एकांकी, दो वैचारिक निबंध, एक आत्मकथा हम अनिकेतन, एक यात्रा वृतांत 'राम पलाश के फूल सिया कचनार कली' जैसी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य को एक नयी ऊँचाई प्रदान की। अध्याय दो राम काव्य परम्परा में 'संशय की एक रात' का स्थान के अंतर्गत ऋगवेद से लेकर उस समय तक राम कथाओं में 'संशय की एक रात' का मूल्य बोध समझाया है। डॉ. सुरेशचंद्र का मंतव्य है कि ''इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रत्येक रचनाकार अपने रचनाक्रम में परम्परा से कुछ लेकर ही परम्परा को कुछ देता है। इस संदर्भ में नरेश मेहता का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने 'संशय की एक रात में राम काव्य परम्परा से लिया कम है, दिया अधिक है। उन्होंने अपनी बहुज्ञता और सर्जनात्मक कल्पना शक्ति के आधार पर 'संशय की एक रात' में ऐसी उद्‌भावनाएँ की है जो नितांत मौलिक हैं। 'संशय की एक रात' के माध्यम से नरेश मेहता ने रामकाव्य परम्परा को नया आयाम प्रदान किया है।'' (पृष्ठ 63)

''यह मेरे मित्र जगयु की आत्मा है
तुम्हारे अग्निदाह से
हम दोनों संतुष्ट है''

युद्ध संबंधी मंत्रणा का प्रसंग 'संशय की एक रात' से पूर्व किसी रामकाव्य में नहीं मिलता है। यह नरेश मेहता की नवीन सृष्टि है। ऐसा करके उन्होंने व्यष्टि के सम्मुख समष्टि की प्रतिष्ठिा की है।'' (पृष्ठ

65) डॉ. सुरेशचंद्र की आलोचना दृष्टि का परिणाम है कि उन्होंने काफी अध्यवसाय के बाद इस तरह के मूल्यबोध को खोज निकाला है कि उन्होंने अध्याय तीन 'जीवन मूल्य : स्वरूप विवेचन' की पृष्ठ 68 से 85 तक में वृहद चर्चा की है और अपने अभिमत को परिपुष्ट करने के लिए 62 उदाहरणों के साथ राजनीतिक गणराज्य की स्थापना और नए राजनीतिक मूल्यों का स्थान, चुनाव की व्यवस्था और उसके परिणाम, प्रादेशिक विद्रोह और सीमा सुरक्षा की समस्या (नागा, गोआ, कश्मीर, भारत और चीनी का विवाद, भारत का पंचशील सिद्धांत) आर्थिक परिवेश (मिश्रित अर्थव्यवस्था, योजनाबद्ध विकास, नेहरू का समाजवादी दृष्टिकोण, औद्योगिकरण, बेरोजगारी) सामाजिक परिवेश (सामाजिक समानता का वैधानीकरण, साम्प्रदायिक तनाव, संयुक्त परिवारों का विघटन, स्त्रियों की सामाजिक सुरक्षा, अकेलेपन एवं अजनबीपन की समस्या) जैसे मुद्दों के बीच 'संशय की एक रात' के मूल्यबोध को टटोलने की कोशिश की है। उन्होंने अध्याय पॉच 'समकालीन जीवन मूल्य और 'संशय की एक रात' को 4–4 उदाहरणों के आधार पर मूल्यबोध को खोजने की सार्थक कोशिश की है। इसमें समकालीन जीवन मूल्य, राजनैतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, नैतिक, दार्शनिक, जीवन मूल्य के साथ 'संशय की एक रात' के कथानक को चार सर्गों 'सांझा का विस्तार और बालूतट, 'वर्षा भीगे अंधकार का आगमन' 'मध्य रात्रि' की मंत्रणा और निर्णय' 'सदिग्ध मन का संकल्प और सवेरा' में विन्यस्त मूल्यबोध को व्यापक परिप्रेक्ष्य में अभिव्यक्त किया है।

यहॉ राजनैतिक संधि और सहयोग समानता की प्रतिष्ठा, स्वतंत्रता की रक्षा, बहुमत अथवा सामूहिक निर्णय का महत्व, साम्राज्यवाद एवं औपनिवेशिकता का विरोध के माध्यम से 'संशय की एक रात' में युद्ध की अनिवार्यता को ही रेखाकिंत कर रहे हैं। हालॉकि साम्राज्यवाद एवं औपनिवेशिकता का विरोध तत्कालीन परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट दृष्टि गोचर हो रहा परन्तु उसी लोकतांत्रिक गर्भ से निगभिक पूॅजीवादी व्यवस्था 1990 के बाद से दिखाई दे रही है। हनुमान के वक्तव्यों के माध्यम से बात को समझा जाय ''लंका में हम/भोजन पदार्थों से बिकते हैं/गरम सलाखों से/प्रत्येक पृथुज्जन देह लिखी है/ये गुलाम हैं/इनका केवल यही नाम है।'' (संशय की एक रात पृष्ठ 20)

रावणीय औपनिवेशिकता हर युग में नये नये कलेवर बदल रही है। दो विश्वयुद्धों के बाद समसामायिक अस्त्र शस्त्रों का उत्पादन और खरीद फरोख्त चिन्ता का विषय है। वैयक्तिक मूल्यों में संकल्प, समर्पण, आत्म स्वीकृति का सोदाहरण चित्रण द्रवटव्य है : ''भू मुकुट जैसे अशोकों के प्रति/हम समर्पित हैं।/दे न पाये छॉह/ हम जिस हंसिनी को/ हमसे श्रेष्ठताों को गाछ हैं।'' (संशय की एक रातः पृष्ठ 79) ''संशय की एक रात'' में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक मूल्यों के अन्तर्गत एकता की भावना, ईकाई भूत मनुष्य की सार्थकता को स्वीकारना, पारिवारिक सम्बंधों का निर्वाह, पूजा के पश्चात् कार्यारम्भ करना, शपथ द्वारा विश्वास पैदा करना, साक्षी (साक्ष्य) देकर प्रमाणिकता सिद्ध करना को सोदाहरण समझाना डॉ. सुरेन्द्र की विशिष्टता है : ''ओ मेरे विवेक?/मुझसे मत प्रश्न करो/संशय की बेला अब नहीं रही/अंतराय जल में/ सूर्योदय साक्षी हैं/ संख्य की बेल अब नहीं रहीं।'' (संशय की एक रातः पृष्ठ 80) यानी कर्मनिष्ठ, सामाजनिष्ठ राम वैयक्तिक स्तर पर संशय मुक्त होकर सूर्य की साक्षी में युद्ध के लिए कृत संकल्प हो जाते हैं। उन्होंने समग्र ग्रंथ में मूल्यबोध के घटक तत्व नैतिक मूल्य (शिष्टाचार, पश्चाताप, जैसा को तैसा होने की भावना), वैज्ञानिक मूल्य (तत्व की विद्यमानता की स्वीकृति, संतान में पूर्वजों के गुणों का संक्रमण), दार्शनिक मूल्य (कर्म, मोहाभिमुखता, शांति की स्थापना) के माध्यम से एक नये दृष्टिकोण को रखा है। जो लोग गोस्वामी तुलसीदास की टीकाऍ करते हैं, उन्हें निराला, मैथिलीशरण गुप्त, नरेश मेहता के राम को पढना चाहिए। वही राम जिन्होंने शम्बूक का वध किया था वे समय एवं परिस्थितियों के आधार पर सॅवरते निखरते हैं। डॉ. सुरेशचन्द्र ने अपने ग्रंथ के अध्याय 6 'समकालीन काव्य में संदर्भित जीवन मूल्य और संशय की एक रात में अंधायुग, द्रौपदी, पाषाणी, उर्वशी, वासन्ती आदि का उदाहरण देकर संशय की एक रात की विशिष्टता रेखांकित की है। इससे डॉ. सुरेश चंदू के आलोचना कर्म पर सवाल तथाकथित दलित आलोचक उठा सकते हैं लेकिन उन्होंने अपनी

तत्कालीन एवं समकालीन वीरप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किया जाय इसको प्रतिपादित किया है। यो देख जाए तो वे संशय की एक रात के मारफत 'एक कंठ विषपाणी' का भी मूल्यांकन कर रहे है। उनका मंतव्य है कि "न्याय के संदर्भ में नरेश मेहता और दुष्यंत कुमार की दृष्टि समान है दोनों कवि न्याय के हामी हैं। संशय की एक रात में न्याय की हर बात अस्वीकार करने वाले रावण के प्रति सब में आक्रोश व्याप्त है और उसके अन्यायपूर्ण व्यवहार के कारण उसके विरूद्ध न्याय का युद्ध होना तय हुआ है। " एक कंठ विषपायी' में अनुचित आचरण के कारण शिव को दंडित करने का प्रस्ताव इन्द्र द्वारा रखा जाता है और विष्णु साधारण जनता को न्याय देने का आश्वासन देते हैं। इसके अतिरिक्त समीक्ष्य दोनों कृतियों में कर्म को समान रूप से महत्व प्रदान किया गया है।" (पृष्ठ 152) टीका करने वाले हम पर या सुरेश चंद्र के आलोचना कर्म पर टीका टिप्पणी करें परंतु कम से कम दो या तीन बार गम्भीरता से किसी कवि या रचनाकार की कृति या कृतियों का अध्ययन करके प्रखर एवं प्रखर आलोचक करें तो काफी अच्छा होगा। आजकल के कुकुरमुत्ते जैसे आलोचक अवर एवं प्रवर की श्रेणी शब्दाडम्बर के आधार पर खींचते हैं। यह परम्परा मिश्रा बंधुओं एवं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के मारफत मार्क्सवाद, समाजवाद, दलित, स्त्री आदिवासी विमर्श का जामा पहनकर आगे बढ रही है। कृति लक्ष्मी या रचनाकार लाक्षी मूल्यांकन सहज एवं सुबोध भाषा में डॉ. सुरेशचन्द्र के आलोचना की भाषा बाहयाडम्बर, शब्दाडम्बर एवं वादों से परे होने के कारण सहृदयों को तुरंत समझ में आ जाती है। सुरेशचंद्र की आलोचना में परम्परा और वैयक्तिक प्रतिभा का सतत् निदर्शन होता है।

पुस्तक : समकालीन मूल्यबोध और संशय की एक रात
आलोचक : सुरेशचंद्र
प्रकाशक : जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
संस्करण : प्रथम 2020 ई.
मूल्य : 150 रूपये

प्रोफेसर, हिन्दी और आधुनिक भारतीय विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज (उ.प्र.)